

- ऑनलाईन शिक्षा से ऑफलाईन होते समय...

- 'ऑनलाईन' का बेजा इस्तेमाल स्वास्थ्य के लिए हानिकारक

- ऑनलाईन शिक्षा में भावना, मस्तिष्क के विकास का अभाव

पुणे. लगभग दस महीने के बाद चार जनवरी से राज्य के स्कूल खुलने जा रहे हैं. स्कूल की घंटी बजने का हम सभी को बेसब्री से इंतजार है. जिससे ऑनलाईन शिक्षा के साए में खो गया प्रत्यक्ष संवाद एकबार फिर से शुरू होने से स्कूल, महाविद्यालय के प्रांगण, कक्षाएं, प्रयोगशाला, ग्रंथालय सभी विद्यार्थियों से भर जाएंगे. दोबारा से शिक्षक-विद्यार्थी का नाता प्रगाढ़ होने लगेंगे. लेकिन इस लंबे कालावधि में ऑनलाईन शिक्षा के बहाने लग चुकी आदतों का क्या होगा? तकनीक का, गैजेट का, इंटरनेट का व मोबाईल-लैपटॉप के अत्याधिक उपयोग तथा नशा कैसे छूटेगा? इन सवालों का हल जरूरी है.

- प्रा. डॉ. संजय चोरडिया, संस्थापक अध्यक्ष, सूर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूट, पुणे



शैक्षणिक वर्ष समाप्त होने के पहले ही कोरोना का आगमन होने से सभी परीक्षाएं पोस्टपॉन्ड हो गए. शिक्षा रूक गई. लॉकडाउन के कारण स्कूलों में ताले जड़ गए. बोर्ड पर धूल चढ़ गए. प्रयोगशालाओं के सर्वर डाऊन हो गए. समयाउपरांत 'ऑनलाईन' का प्रचलन हो गया. परीक्षा हो या लेक्चर सभी ऑनलाईन मोड पर चले गए. छोटे बच्चों से लेकर वृद्ध सभी की क्लास मोबाईल, लैपटॉप पर लगने लगी. पुस्तक की जगह गैजेट्स ने ले ली. उपर से बेहतर क्वालिटी के इंटरनेट आ गए. सूचना का विस्फोट होने लगा. घंटा, दो घंटा ऑनलाईन शिक्षा चलने लगी. बाकी समय में उसपर अन्य चीजें देखी जाने लगी. परिणाम स्वरूप मोबाईल, इंटरनेट व लैपटॉप के जाल में सभी पीढ़ी बझ गए. आंख, कान, पीठ, गर्दन के मर्ज बढ़ने लगे. ऑनलाईन मोड पर जाने से शिक्षक-विद्यार्थी, शालेय कर्मचारी-विद्यार्थी-पालक का संवाद टूट गया. शेयरिंग, केयरिंग, बिलॉन्गनेस खो गया है. समाज को लेकर आस्था की भावना भी कहीं खो सी गई है. आभासी जीवन की आदत लगने से झूठ बोलने की प्रवृत्ति बढ़ने लगे. लगातार उपयोग से 'ऑनलाईन' रहना एक नशा सा हो गया. जिसके चलते दिमाग में नकारात्मक भावना घर करने लगे. जिसे हम सभी ने देखा.

लगातार एक ही चीज के उपयोग से मानसिकता भी उसी तरह की बन रही है, उसे पूर्ववत होने में हमें बदलाव करने होंगे.

'ऑनलाईन' के जाल से बाहर आने के लिए पर्सनल टच, परामर्श, प्रोत्साहन जैसे प्रत्यक्ष चीजों की कमी को दूर करने के लिए हमें अगले तीन-चार महीने तक पूर्णतः 'ऑफलाईन' मोड स्वीकारना होगा. सभी शिक्षा ऑफलाईन स्वरूप में करने पर जोर देना होगा. मेज की शिक्षा, हाथ से लेखन, पुस्तकों का वाचन करने के साथ ही शिक्षा से संबंधित सभी घटकों को दिन में कम से कम समय गैजेट्स के बिना रहना होगा. शिक्षकों को, पालकों को, विद्यार्थियों को मोबाईल, इंटरनेट का त्याग करना होगा. स्कूल के समय में तो इसपर अमल होना जरूरी है. आपत्कालीन परिस्थिति से दो चार होने के लिए स्कूल के लैडलाईन नंबर शुरू रहेंगे. जिसपर आसानी से संवाद साधा जा सकेगा. ऐसी व्यवस्था खड़ी करनी होगी. खाली समय में मोबाईल, लैपटॉप, इंटरनेट से दूर जाते समय वाचन, मनन, चिंतन करने की जरूरत होगी. उसी से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास का लक्ष्य साधा जा सकेगा.

तकनीक का, सोशल मीडिया का व अन्य अनावश्यक साइट्स का अधिक उपयोग तथा व्यसन से मुक्त करने के प्रयत्न हमें करना होगा. ऑनलाईन शिक्षा शुरू थी तब भी उसका प्रभाव बेहद कम था. अनेकों को परिस्थिति के अभाव में, संसाधनों के अभाव में शिक्षा से दूर रहना पड़ा है. इससे शिक्षा की बड़ी हानि हुई है. इस हानि की भरपाई करने की संधि अगले तीन महीने में हो जाएगी. कोरोना के साया अभी भी है. टीका जब आएगा तब आएगा. औषधि से कोरोना ठीक हो जाएगा. लेकिन बच्चों की मानसिकता को ठीक होने के लिए हमसब को एकसाथ प्रयत्न करने होंगे. ऑनलाईन के दौरान बच्चों को न समझ में आई चीजों को समझाना, स्कूल में परामर्शदाता की नियुक्ति, उनकी व्यक्तिगत परेशानियों को समझना, उनका ध्यान विचलित न हो इसकी दक्षता लेना ये सभी चीजें हमें करनी होंगी. जरूरी उपयोग को छोड़ दें तो अगले तीन-चार महीनों तो तकनीक का उपयोग, मोबाईल, लैपटॉप से मुक्ति बेहद जरूरी है. सूर्यदत्ता शिक्षा संस्था में मोबाईल, इंटरनेट के उपयोग पर पाबंदी लगाई जाएगी. स्कूल, महाविद्यालय के समय में विद्यार्थियों के साथ ही शिक्षकों तथा कर्मचारियों को भी मोबाईल के इस्तेमाल पर मनाही होगी. विद्यार्थी-शिक्षक में संवाद को बढ़ाने पर हम जोर देंगे. 'टेक्नोसेवी के चक्कर में पड़कर तकनीक के बेजा इस्तेमाल के कारण होनेवाले मूल्यों के हास को रोकना समय की जरूरत है. ऑनलाईन से ऑफलाईन की ओर लौटते समय इसी पाठ को हमें अपने ध्यान में लाना ही हम सभी के हित में होगा.